om 23 Final_Page 1 and 2 02/03/2015 10:20 Page 7

ब्रह्माकुमारीज़ के यूथ फेस्टिवल के लॉन्चिंग से महाराष्ट्र की कोल्हापुर कलानगरी में स्वच्छ स्वस्थ और स्वर्णिम भारत की क्रांति का शुभारंभ

कोल्हापुर। 'स्वच्छ स्वस्थ स्वर्णिम' भारत अभियान का शुभारंभ करते हुए विधायक राजेश क्षीरसागर, मनोज कुमार शर्मा, ब्र.कु. चंद्रिका, ब्र.कु. सुनंदा, ब्र.कु. कृति तथा अन्य। सभा में गणमान्य जन।

कोल्हापुर। छत्रपति शिवाजी महाराज के पदस्पर्श से और **राजर्षी** शाहू महाराज महान क्रांतिकारी सामाजिक कार्य से पुनीत दक्षिण काशी नाम से प्रख्यात महाराष्ट्र की कोल्हापुर कलानगरी में ब्रह्माकुमारीज़ युवा प्रभाग कोल्हापुर द्वारा 'स्वच्छ स्वस्थ स्वर्णिम' भारत अभियान का राज्य स्तरीय शुभारंभ किया गया। शहर के विधायक मा. राजेश क्षीरसागर, जिला पुलिस प्रमुख मनोज कुमार शर्मा, ब्रह्माकुमारीज़ यूथ विंग की नेशनल को-ऑर्डिनेटर ब्र.कु. चंद्रिका, ब्र.कु. सुनंदा, ब्र.कु. कृति तथा गोवा की ब्र.कु. शोभा की उपस्थिति में इस प्रोजेक्ट का लॉचिंग कार्यक्रम संपन्न हुआ। मेडिटेशन, नृत्य,आतिशबाज़ी, गुब्बारे और दीप प्रज्वलन से इस कार्यक्रम की शानदार शुरुआत हुई। प्रमुख मार्गदर्शिका ब्र.कु. चंद्रिका ने अपनी अमृतवाणी से सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने युवाकाल को जीवन का स्वर्णकाल बताया और इस बात पर खेद भी जताया कि आज की युवा पीढ़ी गुमराह है, और बिना मौत के मर रही है। उसका बौद्धिक, मानसिक और भावनात्मक पतन होता जा रहा है, और वह निराशा डिप्रेशन का भोग बनती जा रही है। वस्तुत: युवा पीढ़ी के अंदर परिवर्तन शक्ति अगाद है जिसे उन्हें महसूस करना चाहिए। युवकों को जीवन में सफल होने के लिए समय,संकल्प, संबंध और संपत्ति इन चार बातों को बचाना चाहिए। उन्होंने बताया कि अंतर्बाह्य स्वच्छता स्वस्थता और स्वर्णिमता के स्वप्न को यथार्थ बनाने के लिए आंतरिक शक्ति और आत्म- विश्वास की आवश्यकता है। इसलिए युवकों को हीन भावना से बचकर अपनी विशिष्टता को पहचानकर आगे बढ़ाना चाहिए। साथ ही समय का महत्व समझकर सकारात्मक संकल्पों पर चलना चाहिए, और कैरेक्टर की हिफाज़त करनी चाहिए। विधायक राजेश क्षीरसागर ने बताया की यह फेस्टिवल निश्चित ही हमारे युवकों के लिए प्रेरणादायी होगा। जिला पुलिस प्रमुख मनोज कुमार शर्मा ने कहा कि जेल के कैदियों को राजयोग की सख्त ज़रूरत है। इस अवसर पर अनेकानेक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाने वाले कोल्हापुर के क्रीड़ा कला संगीत आदि क्षेत्र के युवाओं का प्रमुख अतिथियों के हाथों सत्कार किया गया।

उद्घाटन कार्यक्रम के दौरान सांस्कृतिक प्रस्तुति देते हुए युवा कलाकार

ब्रह्मपुर-ओडिशा। 'विश्व शांति दिवस' पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए डॉ. प्रफुल्ल चन्द्र शाहू। साथ हैं ब्र.कु. लक्ष्मी, ब्र.कु. मंजु तथा ब्र.कु. लहर।

सोलापुर-महा.। '7 बिलियन एक्ट्स ऑफ गुडनेस' कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर महानगरपालिका अध्यक्ष सुशीला ताई आबुटे को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सोमप्रभा तथा ब्र.कु. करजगी। साथ है ब्र.कु. रामप्रकाश, म्युनिसिपल कमिश्नर चन्द्रकांत गुडेवार, डॉ. शिवपुजे तथा ब्र.कु. मस्के।

दिल्ली-आर.के. पुरम । 'घर गृहस्थ में सुखमय जीवन' कार्यक्रम में संबोधित करते हुए ब्र.कु. ज्योति

मधुर अनुभव मधुबन में ...।

आप ऐसा जादू कर दो कि मैं आपसे मिल सकूं। और वो मिलन का दिन आ गया! जैसे शिवबाबा ने मेरी बातें सुन ली हों। मैंने जो भी संकल्प चलाये थे, बाबा ने पूरे किये। ऐसा कहना है त्रिगुणा जे. साणजा का, जो मोरवी-गुजरात की रहने वाली हैं। वो पिछले डेढ़ साल से ज्ञान में चल रही हैं। उनसे बातचीत के कुछ अंश यहां प्रस्तुत हैं।

सबसे पहले मेरी माँ लगभग 9-10 साल से ज्ञान में चल रही हैं। ज्ञान मिलने से पहले मैं अपनी माँ का इस ज्ञान के विषय में बहुत विरोध करती थी ।

– जैसे बाबा कहते हैं, जब ड्रामा में होता है तभी हम पार्ट बजा सकते हैं। ऐसा मेरे साथ भी हुआ। एक बार छुट्टियों में मैं अपने मायके में गई थी। तभी सेंटर पर कोर्स शुरु हुआ। मेरी माँ ने आकर मुझसे पूछा कि कल सुबह तू मेरे साथ मुझे छोड़ने के लिए चलेगी? मैं मान गई और बोली चलूंगी। फिर मैं सेंटर पर पहुंची तो माँ ने कहा आज कोर्स शुरु हुआ है, आप नीचे के रूम में बैठो, मैं मुरली सुनती हूँ। मैं तो नीचे कोर्स करने बैठ गई और अपने ज्ञान का पहला पाठ जो बाबा हमें सिखाते हैं ''मैं कौन हूँ'' का ज्ञान मिला। सुनकर बहुत अच्छा लगा कि मैं आत्मा हूँ! अपनी रोज़मर्रा की लाईफ में हम इतने खो जाते हैं कि जो अपने आप को भूले हुए होते है। जब मैंने समझा कि मैं तो एक खूबसूरत चैतन्य सत्ता हूँ, यह जानकर मुझे बहुत ही अच्छा लगा। अपनी अभिलाषा के कारण मैं दूसरे दिन भी खुशी-खुशी क्लास में पहुंच गई। कभी-कभी व्यर्थ में चली जाती तो बाबा मुरली से अटेन्शन दिलाते थे। मुरली से मेरी कई समस्या हल हो जाती थी। पहले मैं रात को बहुत डर जाती थी, पर जब से बाबा की गोदी में सोने लगी हूँ मुझे कभी डर नहीं लगता।

मैं सोचती थी बाबा, मेरा कोर्स हो गया, मुरली भी सुनती हूँ, ज्ञान भी अच्छा लगता है लेकिन मुझे आपसे मिलना है। आप ऐसा जादू कर दो कि बच्चों की छुट्टियाँ भी साथ में हो और मिलन भी, ताकि मैं आपसे मिल सकूं। और वो मिलन का दिन आ गया! जैसे बाबा ने मेरी बातें सुन ली हों। मैंने जो भी संकल्प चलाये थे, बाबा ने पूरे किये। ''25 दिसंबर'' बाबा से मिलने का समय आया। मेरा पहली बार मधुबन जाने का जो सपना था वो मानो साकार होने वाला था। मैं बच्चों को छोड़कर कैसे जाऊँ... लेकिन बाबा कहता है ना ''बच्चे तुम चिंता मत करो मैं बैठा हूँ'' तो बस मैं अपने बच्चों को अपने परिवार और बाबा के साथ छोड़कर मधुबन आ गई।

मधुबन आकर मुझे सबसे पहले शांति का अनुभव हुआ जिसका अनुभव मैंने कभी नहीं किया था। यहाँ के ब्र.कु. भाई-बहनों की सेवा देखकर मैं दंग रह गई। यहां का पॉज़ीटिव वायब्रेशन और पवित्र वातावरण शांति का अनुभव कराने में बहुत मदद करता है। मैंने कभी कोई ऐसी संस्था नहीं देखी जो इतनी अच्छी तरह संचालित होती हो। सलाम करती हूँ मैं समर्पित भाई-बहनों को जो यहाँ इतनी अच्छी सेवा करते हैं।

मुरली में बाबा कहते हैं ''मधुबन तुम्हारे बाप का घर है'' यह बात सच होती नज़र आई। यहां का सुबह से शाम तक का जो कार्यक्रम है वो मुझे बहुत पसंद आया। और फिर आ गई वो घड़ी जिसका मुझे इंतज़ार था बापदादा से मिलने का।

मुझे ऐसा लगता था कि बाबा पूरे हॉल में सिर्फ मुझे ही देख रहे हैं। फिर तो बाबा के साथ रूह-रुहान हुई और मैं बाबा का लकी सितारा, रूहे गुलाब बन गई।